P.G. SEM-II Paper 5

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में संस्थाओं की भूमिका —

जैसे जैसे स्वतंत्रता संग्राम तीव्रतर होता गया वैसे-वैसे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन जोर पकड़ता गया। राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार में सक्रिय योगदान देनेवालों में पण्डित मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, राजाराम मोहन राय, महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, काका कालेलकर, पुरुषोत्तम दास टण्डन, सेठ गोविन्ददास का नाम लिया जा सकता है। गाँधी जी की प्रेरणा से सन 1925 में कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि कांग्रेस अपने समस्त कार्यालय हिन्दी भाषा में करेगी। गांधी जी के प्रयास से वर्धा और मद्रास में राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई। हिन्दी को स्कूलों में प्रवेश दिलाने का श्रेय राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द को है। हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान करने वाली अनेक संस्थाएं हैं जिसमें प्रमुख है —

(1) काशी नागरी प्रचारिणी सभा — भारतेंदु काल में साहित्य निर्माण का कार्य प्रचुर मात्रा में हुआ किन्तु उसके प्रचार प्रसार में अनेक बाधाएं थीं। नौकरी पाने के इच्छुक लोग प्रायः अंग्रेजी और उर्दू की शिक्षा ग्रहण करते थे क्योंकि अंग्रेजी शासकों की भाषा थी और उर्दू अदालतों की। हिन्दी के प्रचार के

Scanned with CamScanner

लिए भारतेंदु जी बहुत सारे नगरों में जाकर मार्मिक व्याख्यान दिया और यह दोहा भी सुनाया —

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के सूल॥

पं० प्रताप नारायण मिश्र भी हिन्दी हिन्दू, हिन्दुस्तान की वकालत कर रहे थे। इसी क्रम में 1893 ई० में कुछ उत्साही छात्रों के परिश्रम से काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई जिसमें बाबू श्यामसुन्दर दास, पं० रामनारायण मिश्र एवं शिवकुमार सिंह प्रमुख थे। इसके प्रथम सभापति भारतेन्दु जी के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्ण दास हुए। हिंदी के विकास के लिए इस सभा ने ठोस कार्य किए — हिन्दी के प्राचीन हस्तलीपियों की खोज, हिन्दी के शब्द कोशों का निर्माण हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास लेखन, साहित्यिक संगोष्ठियों का आयोजन और अन्य शोध कार्य आदि विभिन्न योजनाओं का नागरी प्रचारिणी सभा ने बड़ी निपुणता से कार्यान्वित किया है। यह हिन्दी की प्रथम संस्था है। हिन्दी को राजभाषा पद प्राप्त कराने का जो गौरव प्राप्त हुआ है, इसमें सभा का बड़ा योगदान है।

(2) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा — दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु में हिन्दी का विरोध राजनीतिक कारणों से हो रहा था। तभी 1918 ई० में गाँधी जी ने इन्दौर में होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दक्षिण भारत की एक

वृहत योजना बनायी। महात्मा गाँधी की अध्यक्षता में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दक्षिण भारत प्रचार सभा का गठन किया गया। गाँधी जी की अपील पर इंदौर के सेठ हुकुमचन्द तथा तत्कालीन नरेश महाराजा यशवंत राव होलकर ने दस दस हजार की धनराशि भी प्रदान की। इस संस्था के स्थापना के पीछे दो मुख्य कारण थे — पहला इसका गठन इसाई मिशनरियों के प्रचार के जवाब में हुआ था। दूसरा गाँधी जी की इच्छा थी कि दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार प्रसार दक्षिण भारतीयों के द्वारा हो।

(3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग - उत्तर प्रदेश के प्रयाग में स्थित "एक हिंदी सेवी संस्था है हिन्दी साहित्य सम्मेलन। इसकी स्थापना अक्टूबर 1910 को की गयी थी। पुरुषोत्तम दास टंडन ने इसकी स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सम्मेलन से प्रारंभ में प्रथमा मध्यमा साहित्यरत्न तीन परीक्षाएं आयोजित होती थी। देश के लाखों लोगों ने सम्मेलन की परीक्षाएं उत्तीर्ण कर हिन्दी का अध्ययन किया। मेधावी को परीक्षा उत्तीर्ण करनेवालों को विशारद उपाधि मिलती थी।

(4) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा - महात्मा गांधी एवं पुरुषोत्तम दास टंडन ने 1936 में हिन्दी प्रचार से राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना

Scanned with CamScanner

की। टंडन जी के एक प्रस्ताव के अनुसार दक्षिणेत्तर अहिंदीभाषी प्रांतों में हिंदी प्रचार के लिए एक हिंदी प्रचार समिति गठित की गयी। ~~इस समिति की प्रथम बैठक वर्धा~~ इस समिति का उद्देश्य अहिंदी भाषी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार तथा राष्ट्रीय भावना का निर्माण करना था। इनका आदर्श वाक्य था – 'एक हृदय भारत जननी'। यहाँ से राष्ट्रभाषा और राष्ट्र भारती नामक पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती थीं। हिन्दी सीखने के लिए इस समिति ने अनेक विद्यालय खोले। इसके अनेक केन्द्र विदेशों में भी हैं।

(5) महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे → मराठी भाषी प्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करने हेतु महात्मा गाँधी जी की प्रेरणा से महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की स्थापना हुई। आचार्य काका साहब कालेलकर जी की अध्यक्षता में दिनांक 22 मई, 1937 को पूना में महाराष्ट्र के रचनात्मक कार्यकर्ताओं, राजनीतिक व सांस्कृतिक नेताओं आदि का सम्मेलन सम्पन्न हुआ और फिर महाराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति वहीं से सम्बद्ध रही। फिर 12 अक्टूबर 1945 को यह समिति "महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे" के नाम से काम करने लगी।

इसके अतिरिक्त प्रयाग महिला विद्यापीठ, हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी आदि भी ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Scanned with CamScanner